International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 10-03-2024, Accepted: 26-03-2024, Published: 12-04-2024
Volume 10, Issue 2, 2024, Page No. 79-80

मध्य प्रदेश में महिलाओं का राजनीतिक विकास पर एक लेख

सोनूपांचाल विवकर्मा
सामाजिक विज्ञान विभाग, सरोजनी नायडू भाासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भव ाासी महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेा, भारत

सारांश
शोध से पता चलता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं के राजनीतिक पद के लिए जोड़ना या राजनीतिक कैरियर में रुचि व्यक्त करने की संभावना कम होती है यह लिंग अंतर जिस राजनीतिक महत्वाकांक्षा अंतर के रूप में जाना जाताहै एक ऐसा कारक है जो निर्वाचित पदों पर महिलाओं की कम प्रतिनिधित्व में योगदान देता है राजनीतिक महत्वाकांक्षा के अंतर्गत का एक संभावित कारण यह है कि महिलाओं को राजनीतिक रूढ़िवादी लक्षणों में पुरुषों की तुलना में कम रुचि होने के लिए समाजिकृत किया है विशेष रूप से यह देखना महत्वपूर्ण है कि पुरुष और महिलाएं राजनीतिक लक्ष्य से क्या समझते हैं और यह धारणाएं महिलाओं की राजनीति के महत्वाकांक्षा को कैसे प्रभावित करती हैं।

मूल शब्द: राजनीतिक विकास का आर्थिक स्थिति, महिलाओं का राजनीति में प्रभावकार

प्रस्तावना
भारत की आजादी के 75 साल बाद भी तमाम दावों के बाद भी तमाम दावों के विपरीत महिला सशक्तिकरण एवं महिला विकास अभी भी दूर की कौड़ी है 193 देश में केवल 22 देश में से सरकार की मुखिया या राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला है केवल 13 देश के कैबिनेट में 50% महिला की भागीदारी है। राजनीति को केंद्र में रखकर देखें तो हाल ही में मोदी सरकार ने महिला आरक्षण बिल अर्थात नारी शक्ति बंधन अधिनियम को कानून बनाया है जिसके अंतर्गत महिलाओं को लोकसभा और विधानसभा में थे 30% आरक्षण देने का प्रावधान है यदि ईमानदारी से कानून का पालन किया जाए तो बड़ी संख्या महिला राजनीतिक प्रदेश में देखेंगे किंतु यह अभी दूर की कौड़ी है।

वर्तमान समय में मध्य प्रदेश के 230 विधायकों में मात्र 21 महिला है यदि नारी शक्ति वंदन को लागू किया जाए तो प्रदेश में महिला विधायकों की 76% हो जाएगी हो सकता है महिलाओं का विधानसभा में आंकड़ा इससे भी अधिक हो।

बड़े हालत की इतिहास देखें तो मध्य प्रदेश में महिला नेत्री, महिला नेत्रियों की राजनीति में कुछ खास नहीं चली है 2003 के विधानसभा चुनाव में जब भाजपा ने महिला नेत्री एवं उमाभारती को नेता बनाया था पूरे प्रदेश से 199 महिला चुनावी मैदान में उतरी थी किंतु इनमें से मात्र 19 अर्थात 10.09 प्रतिशत ही जीत पाई थी। अपवादों को छोड़ दें तो भी पता नहीं क्यों किंतु राजनीति में महिलाओं को जानता भी बहुत हद स्वीकार नहीं कर पाती है महिलाओं को स्वीकार करने जादा तर तो हालांकि राजनीतिक दल भी नहीं करते हैं कांग्रेस की 144% प्रत्याशियों की सूची में 19 महिलाओं को अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया गया है जबकि भाजपा ने अब तक 136 घोषित किया है प्रत्याशियों में मात्र 17 महिलाओं को ही चुनाव लड़ने योग्य माना है।

दोनों दलों के शेष बचे उम्मीदवारों में महिलाओं को भी बड़ी संख्या में टिकट मिलने की संभावना लगभग न है ऐसे में राजनीतिक दल उनकी बड़ी मात्रा ज्यादा संख्याओं को बनाने का ही उपक्रम करते नजर आ रहे हैं।

राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के निम्नलिखित कारण हैं

पितृसत्तात्मक समाज
राजनीति में महिलाओं की कम भागीदारी के निम्नलिखित कारणों में पितृसत्तात्मक समाज तथा इसकी संरचनात्मक कमियॉ हैं।इसकी वजह से महिलाओं को कम अवसर मिलते हैं तथा वे राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में पुरूषों से काफी पीछे रह जाती हैं।

लगभग एक तिहाई महिलाओं पितृसत्तात्मक समाज को उनकी राजनीतिक भागीदारी में बाधा के रूप में देखा।

धरेलू जिम्मेदारियॉ
सर्वेक्षण में अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि धरेलू जिम्मेदारियॉ जैंसे बच्चों की देखभाल् धर के सदस्यों के लिये खाना बनाना व अन्य पारिवारिक कारणों से वे राजनीति में भाग नहीं ले पातीं।

लगभग राजनीति 13% महिलाओं ने उनकी कम भागीदारी के लिये धरेलू जिम्मेदारियॉ को कारण माना।

व्यक्तिगत कारण
कई महिलाएँ व्यक्तिगत कारणों की वजह से भी राजनीति में सकि य रूप से भाग नही लेतीं।ये व्यक्ति कारण हैं.राजनीति में रूचि न होना् जागरूकता का अभाव ौक्षिक पिछडापन आदि।

लगभग 10% महिलाएँ व्यक्तिगत कारणों से राजनीति में हिस्सा लेने में सक्षम नहीं हैं।

धनंजय प्रताप सिंह भोपाल
लोकसभा और राज्यसभा से नारी शक्ति वंदन विधेयक पारित होने के बाद से ही राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढाये जाने को लेकर दे ा में बहस छिड गई हैं। महिलाओं को आरक्षण संबंधी कानून बनने के बाद उन्हें लोकसभा औंर विधानसभाओं में मिलेगा।

वर्तमान स्थिति की बात करें कोई भी राजनीतिक दल ऐसा नहीं हैं, जो 15 प्रति ात टिकट भी महिलाओं को देता हो भोध में पाया गया हैं कि महिलाओं की चुनावी भागीदारी में उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति का वि ोष प्रभाव होता हैं। उच्च सामाजिक वर्ग (जाति) व आर्थिक वर्गो की महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी अधिक पाई, जबकि निम्न सामाजिक आर्थिक तबके की महिलाओं में यह भागीदारी अत्यधिक कम थी। हालॉकि पिछलक कुछ वर्षो में चुनावों में मतदाता के रूप में महिलाओं की भूमिका बढ़ी हैं। अनेक राज्यों में हुए विभिन्न चुनावो में महिलाएँ पुरूषों के समान मतदान कर रही हैं, जबकि

कई स्थानों पर वे पुरूषों की तुलना में अधिक मतदान कर रही हैं।

इसके अलावा महिलाएँ अपनी राजनीतिक पसंद को लेकर भी स्वायत हो रही हैं किन्तु यह प्रचलन भी भाहरी क्षेत्र की तथा ि ाक्षित महिलाओं में अधिक देखा गया ।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि सरकार और समाज ने भी आप काफी हद तक महिलाओं की राजनीति में समान भागीदारी की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं और वह यह भी साबित कर रहे हैं कि महिलाओं के सम्मान और सशक्तिकरण ने राजनीति को एक नई ऊंचाई प्रदान की है राजनीति के नए आयाम बनाए जा रहे हैं जिससे मैं महिलाओं को समान रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है भले ही पंचायत स्तर पर ही क्यों ना हो गांव के सरपंच ने तो कई पंचायत स्तर के चुनाव में महिला उम्मीदवारों को जीत और उन्नति के नए द्वार खुले हैं।

संदर्भ सूची

1. शक्ति संघर्ष और समुदाय 1 अगस्त 2006 अंक।
2. सामाजिक आर्थिक राजनीतिक भागीदारी ही महिला की सशक्तिकरण की कुंजी है डॉक्टर ऐश्वर्या झा।
3. शर्मा गोपीनाथ 2008 राजस्थान का सांस्कृतिक इत
4. शर्मा प्रज्ञा 2011 वूमेन इन इंडियन सोसाइटी जयपुर
5. वूमेन इन इलेक्ट्रॉनिक्स मध्य प्रदेश 1 अगस्त 2016।
6. दृष्टि आइए एस. पेपर से 2 से
7. मध्य प्रदेश के इलेक्शन 2023 जागरण समाचार से 24 सितंवर से